

# इस्लाम और ईसाई धर्म के बीच समानताएं और अंतर (2 का भाग 1): एक समान लेकिन अलग

रेटिंग: **TOP20**

विवरण:

द्वारा: Aisha Stacey (© 2017 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

प्यू अनुसंधान केंद्र [1] के अनुसार इस्लाम वर्तमान में ईसाई धर्म के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा धर्म है। यद्यपि जनसांख्यिकीय रुझान ऐसे ही चलता रहा तो 21वीं सदी के अंत से पहले इस्लाम के ईसाई धर्म से आगे निकलने की उम्मीद है। दुनिया की स्थिति आज दो विशाल संस्थाओं को एक दूसरे के खिलाफ आमने-सामने होने की कल्पना करना आसान बनाती है लेकिन ऐसा नहीं है। इस्लाम और ईसाई धर्म में कई समानताएं हैं। वास्तव में, यह सोचना आसान है कि भिन्नताओं की तुलना में अधिक समानताएं हैं।



इस्लाम और ईसाइयत दोनों ही अपने अनुयायियों को शालीन कपड़े पहनने और व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और दोनों का मानना है कि परोपकारी होना और करुणा दिखाना मनुष्य में वांछनीय गुण हैं। वे दोनों प्रार्थना और ईश्वर के साथ संचार पर जोर देते हैं, दोनों लोगों को दयालु और उदार होने का आह्वान करते हैं, और दोनों सलाह देते हैं कि दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम अपने लिए चाहते हो। दोनों धर्म अपने अनुयायियों से सच्चे होने, बड़े पापों से दूर रहने और क्षमा माँगने को कहते हैं। और दोनों धर्म यीशु का सम्मान करते हैं और उनसे प्यार करते हैं और उम्मीद करते हैं कि वह अपने दिनों के अंत के आख्यानो के अनुसार पृथ्वी पर वापस आएं।

दोनों धर्मों के सदस्य हमें विश्वास दिलाते हैं कि वे अलग-अलग हैं लेकिन उनका इतिहास ठीक उसी जगह से शुरू होता है, आदम और हवा के साथ बगीचे में से। यह पैगंबर इब्राहिम के जीवनकाल से है कि इनके रास्ते अलग-अलग होने लगते हैं, लेकिन अगर इनके शुरुआत पर जोर दिया जाये तो इस्लाम और ईसाई धर्म के साथ-साथ यहूदी धर्म को सामूहिक रूप से इब्राहिम धर्मों के रूप में जाना जाता है।

# पैगंबर

क़ुरआन के अनुसार, इब्राहीम को ईश्वर के प्रथि सेवक के रूप में जाना जाता था; उनकी गहरी भक्ति के कारण, ईश्वर ने उनके कई वंशजों को उनके ही लोगों के लिए पैगंबर बनाया। पैगंबर इब्राइम को अपने बेटे की बलि देने की आज्ञा दिए जाने की कहानी ईसाई और इस्लाम दोनों में जानी जाती है। इस्लाम में वो बेटा इस्माईल [2] है और उनके वंश में ही पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) आये जिन्होंने इस्लाम की स्थापना की। ईसाई धर्म के अनुसार, बलिदान कथा में इब्राहिम के पुत्र इसहाक [3] हैं। इसहाक के वंश में याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलैमान और यीशु सहित कई पैगंबर आते हैं।

इस्लाम के विश्वास के छह स्तंभों में से एक के लिए यह आवश्यक है कि एक मुसलमान सभी पैगंबरों पर विश्वास करे। एक को अस्वीकार करना उन सभी को अस्वीकार करने के बराबर है। मुसलमानों का मानना है कि ईश्वर ने कई पैगंबर भेजे, हर देश में एक। हम कुछ के नाम जानते हैं और कुछ के नहीं। पैगंबर मुहम्मद ने कहा है कि सभी पैगंबर एक दूसरे के भाई हैं। [4] इस प्रकार आप पाएंगे कि बाइबलि में वर्णित सभी पैगंबर इस्लाम द्वारा सम्मानित और स्वीकार किए जाते हैं। क़ुरआन में उनमें से कई का उल्लेख किया गया, जसिमें उनके नाम के साथ उनकी जीवन की वसितृत कहानियां हैं। इस्लाम सभी पैगंबरों के साथ सम्मान का व्यवहार करता है और बाइबलि की उन कहानियों को खारजि करता है, जसिमें पैगंबरों का उपहास किया गया है और उनकी छविको खराब किया गया है।

ईसाई धर्म स्वीकार करता है कि मुहम्मद अस्तित्व में थे, लेकिन वह उन्हें पैगंबर नहीं मानते हैं। पूरे ईसाई इतिहास में उन्हें झूठा और पागल कहा गया है; कुछ लोगों ने तो उन्हें शैतान से भी जोड़ दिया। दूसरी ओर, इस्लाम पैगंबर मुहम्मद को ईश्वर की ओर से मानवजातिपर दया करने वाला मानता है। जहां तक यीशु का सवाल है, ईसाई और मुसलमानों की कई ऐसी ही मान्यताएं हैं। दोनों का मानना है कि जब यीशु की माँ ने उन्हें जन्म दिया तो उनकी मां मरयम कुंवारी थी। दोनों धर्मों का मानना है कि यीशु ही इस्राइल के लोगों के लिए भेजा गया मसीहा था और दोनों का मानना है कि उसने चमत्कार किए। इस्लाम हालांकि कहता है कि इस तरह के चमत्कार ईश्वर की इच्छा और अनुमति से किए गए थे। इस्लाम पैगंबर यीशु को ईश्वर का दास और दूत कहता है और उन्हें पैगंबर और दूतों की लंबी कतार में एक व्यक्तिके रूप में उनका बहुत सम्मान करता है, जो सभी लोगों को एक ईश्वर की पूजा करने के लिए कहते थे। इस्लाम इस धारणा को पूरी तरह से खारजि करता है कि यीशु ईश्वर है या ट्रिनिटी का हिस्सा है।

# ट्रिनिटी

ट्रनिटी ईसाई धर्म का मूल विश्वास है, जो कहता है कि एक ईश्वर है जिसकी तीन अभिव्यक्तियाँ हैं, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा। ईश्वर का एक पुत्र है, जिसें यीशु कहा जाता है, जो स्वयं ईश्वर भी है और इनके माध्यम से एक व्यक्तिपति (ईश्वर) तक पहुंच सकता है। पवत्रि आत्मा जो ईश्वर भी है, एक दविय शक्ति है, वह रहस्यमय शक्ति जिसपर विश्वास किया जाता है। ट्रनिटी को कभी-कभी कबूतर के पंख या आग की जीभ के रूप में चित्रित किया जाता है। यह एक विवादास्पद सिद्धांत है जो बाइबलि की शिक्षा और प्रारंभिक ईसाई चर्च में सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास के रूप में सामने आया। यीशु की प्रकृतिपर विवाद के कारण रोमन सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने सीई 325 में निकिया की परिषद बुलाई। और यह ट्रनिटी का ही सिद्धांत था जो पूर्वी और पश्चिमी चर्चों के बीच विभाजन का कारण बना। आज भी बहुत से लोग उस सिद्धांत को समझने या समझाने में असमर्थ हैं, जिसें वे मानते हैं।

खुद को एकेश्वरवादी मानना इस्लाम और ईसाई धर्म दोनों के लिए सामान्य बात है। एकेश्वरवाद ग्रीक शब्द 'मोनोस' से बना है जिसका अर्थ केवल और 'थियोस' का अर्थ ईश्वर है। इसका उपयोग एक सर्वोच्च व्यक्ति को परिभाषित करने के लिए किया जाता है जो सर्वशक्तिमान है, ब्रह्मांड का निर्माता और पालनकर्ता है, जो जीवन और मृत्यु का मालिक है। हालांकि मुसलमानों का मानना है कि वे ट्रनिटी जैसी अवधारणाओं के बिना शुद्ध एकेश्वरवाद को मानते हैं। इस्लाम की मूल मान्यता यह है कि ईश्वर के सिवा कोई भी पूजा के योग्य नहीं; यह एक सरल अवधारणा है जिसमें सिर्फ ईश्वर की ही पूजा की जाती है।

## शास्त्र

मुसलमान कुरआन और पैगंबर मुहम्मद की प्रमाणिक परंपराओं से ईश्वर की प्रकृति के बारे में अपनी समझ प्राप्त करते हैं। कुरआन बताता है कि ईसाई धर्म की सभी दविय पुस्तकें, पुराना नियम, जिसमें भजन संहिता की पुस्तक और यीशु के इंजील वाले नए नियम शामिल हैं, ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए थे। इसलिए, मुसलमान बाइबलि में विश्वास करते हैं, जब यह कुरआन के समान होता है। मुसलमान केवल वही मानते हैं जिसकी कुरआन और पैगंबर मुहम्मद की परंपराओं में पुष्टि की गई है क्योंकि इस्लाम कहता है कि पुराने और नए दोनों नियमों के मूल पाठ को खो दिया गया है, बदल दिया गया है, विकृत कर दिया गया है या भुला दिया गया है।

मुसलमानों का मानना है कि कुरआन अंतिम प्रकट पाठ है और ईश्वर के सटीक शब्दों को स्वर्गदूत जबरिल के माध्यम से पैगंबर मुहम्मद तक पहुंचाया गया। ईसाई धर्म हालांकि यह मानता है कि बाइबलि ईश्वर से प्रेरित थी और कई अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखी गई थी।

## फुटनोट:

[1]

<http://www.pewresearch.org/fact-tank/2017/02/27/muslims-and-islam-key-findings-in-the-u-s-and-around-the-world/>

[2]

कुरआन 37:101 - 103

[3]

उत्पत्त 22

[4]

???? ?? ???????

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/11182>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।